ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

उपलब्धि प्रेरणा प्राप्तांकों के संदर्भ में विषाद् स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Depression Level In Terms of Achievement Motivation

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

लक्ष्मी
क्लीनिकल साइकोलोजिस्ट,
हेल्थ विभाग,
जे. एस. हिंदू डिग्री कॉलेज
अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वर्तमान अध्ययन में छात्र तथा छात्राओं में विषाद् स्तर का अध्ययन उपलब्धि प्रेरणा प्राप्तांकों के संदर्भ में किया गया। अध्ययन के लिए 150 पुरूष तथा 150 स्त्री की संख्या पर उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण भाटिया (1978) तथा कपूर (1987) का प्रयोग किया गया। प्राप्तांकों का विश्लेषण टी–परीक्षण द्वारा करने पर प्राप्त हुआ कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में विषाद् की मात्रा अधिक होती है।

In the present study, the level of depression in students and students was studied in terms of achievement motivation scores. The achievement motivation test Bhatia (1978) and Kapoor (1987) were used for the study on 150 males and 150 females. After analyzing the scores by t-tests, it was found that the amount of depression is higher among the students than the students.

मुख्य शब्द : अवसाद, उपलब्धि प्रेरणा।
Depression, Achievement Motivation

प्रस्तावना

उपलब्धि प्रेरणा का तात्पर्य व्यक्ति के अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने तथा दूसरों से श्रेष्ठ बनने की इच्छा से है। मैक्लीलैंड (1953) तथा एटकिंसन (1964) आदि ने उपलब्धि प्रेरणा का क्रमबद्ध एवं व्यापक अध्ययन किया और बताया कि सामान्य रूप से यह प्रेरणा व्यक्ति को जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रकर्षता (Excellence) प्राप्त करने के लिए सक्रिय करता है। उपलब्धि प्रेरणा से उद्वेलित व्यक्ति चुने गए क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना चाहता है तथा अपने उपलब्धि स्तर को उत्कृष्ट करने का प्रयत्न करता है। प्रतियोगिता में सर्वोच्च स्थान पाने की लालसा करता है तथा अपने जीवन को सदैव प्रगतिशील बनाने के लिए संघर्ष करता है। ऐसा व्यक्ति अपनी सभ्यता पर गर्व का अनुभव करता है तथा प्रसन्न रहता है। वह कार्यक्षेत्र में होने वाली सफलता तथा विफलता के लिए अपने को उत्तरदायी मानता है। एटकिंसन तथा फेदर (1966) ने उपलब्धि प्रेरणा को परिभाषित करते हुए कहा कि सफलता प्राप्त करने तथा उपलब्धि से सम्बन्धित व्यक्ति की यह अपेक्षाकृत स्थायी वृत्ति है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि इस प्रेरणा का विकास व्यक्ति के जीवनकाल में पालन–पोषण की प्रणाली, सामाजिक–आर्थिक स्तर, पारिवारिक परिवेश, सफलता एवं विफलता आदि द्वारा होता है। मार्शल तथा हेल्स (1972) के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उपलब्धि की प्रेरणा अर्जित होती है तथा इस प्रेरणा का महत्वपूर्ण प्रभाव व्यक्ति की मनोदशा तथा व्यवहार पर पड़ता है। (निजेल तथा हैरिस, 1990)

उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्धित अध्ययनों से पता चलता है कि विभिन्न व्यक्तियों में यह प्रेरणा अलग–अलग मात्रा में पायी जाती है। इस प्रेरणा की विभिन्न मात्राऐं व्यक्ति के अन्दर अलग–अलग व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को उत्पन्न करती हैं। उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले व्यक्ति जीवन में ऊँचे लक्ष्य रखते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम भी करते हैं। सफलता की स्थिति में अपने लक्ष्य को और ऊँचा करते हैं। लेकिन इसकी विपरीत असफलता की स्थिति में वे कुंठित भी होते हैं तथा कभी–कभी गहन निराशा के शिकार हो जाते हैं। इस संदर्भ में एक प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या

व्यक्ति की उपलब्धि प्रेरणा उसके अन्दर विषाद् की मात्रा को प्रभावित करती है? वर्तमान अध्ययन इसी प्रश्न के उत्तर का एक प्रयास है।

वर्तमान अध्ययन में यह परिकल्पना की गई कि–

1. पुरूष तथा स्त्री प्रयोज्यों के बीच विषाद् की मात्रा को लेकर सार्थक भिन्नता होगी।
2. उच्च तथा निम्न विषाद् समूहों के बीच उपलब्धि प्रेरणा को लेकर सार्थक भिन्नता होगी।
3. विषाद् मापनी द्वारा प्राप्त किए गए प्राप्तांकों पर यौन भिन्नता तथा उपलब्धि प्रेरणा समूहों का व्यक्तिगत रूप से तथा अतः क्रियात्मक रूप से सार्थक प्रभाव होगा।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में 150 पुरूष तथा 150 स्त्री प्रयोज्यों का चयन इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया कि पुरूष तथा स्त्री प्रयोज्य उम्र, शिक्षा, निवास जैसे कारकों के दृष्टिकोण से सादृष होंगे। प्रयोज्यों में उपलब्धि प्रेरणा तथा विषाद् स्तर के मापन के लिए उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण भाटिया, 1978 तथा कपूर 1987 का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं संख्या

सारणी–1

पुरूष तथा स्त्री प्रयोज्यों के बीच विषाद् प्राप्तांकों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य
पुरूष	150	27.81	8.12	5.47
स्त्री	150	33.67	10.19	

* .01 स्तर पर सार्थक

सारणी–1 में प्रस्तुत परिणामों की व्याख्या से स्पष्ट होता है कि स्त्री प्रयोज्यों (मध्यमान = 33.67) ने पुरूष प्रयोज्यों (मध्यमान = 27.81) की तुलना में विषाद् मापनी पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त किया है। दोनों मध्यमानों के बीच के अन्तर की सार्थकता की जांच के लिए जब टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया तो टी–मूल्य 5.47 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के .01 स्तर पर सार्थक है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि विषाद् को लेकर पुरूष तथा स्त्री प्रयोज्यों के बीच सार्थक भिन्नता होती है।

सारणी–2

उपलब्धि प्रेरणा प्राप्तांकों के सम्बन्ध में विषाद् स्तर की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	मूल्य
पुरूष	उच्च	75	14.27	0.42*	सार्थक नहीं
	निम्न	75	13.89		
स्त्री	उच्च	75	17.72	1.06*	सार्थक नहीं
	निम्न	75	16.63		

सारणी–2 में दर्शाए गए परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पुरूष प्रयोज्यों के उच्च विषाद् समूह (मध्यमान = 14.27) ने उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण पर निम्न विषाद् समूह (मध्यमान = 13.89) की तुलना में उच्च प्राप्तांक प्राप्त किया है। इसका तात्पर्य यह है कि उच्च उपलब्धि प्रेरणा व्यक्ति में विषाद् की उच्च मात्रा को उत्पन्न करती है। लेकिन इस तथ्य का समर्थन सांख्यिकीय विश्लेषण से नहीं हो पाता क्योंकि दोनों समूह के बीच प्राप्त टी–मूल्य (टी = 0.42) सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि उपलब्धि प्रेरणा उच्च तथा निम्न विषाद् समूहों के बीच सार्थक भिन्नता स्थापित करने में असफल है। लगभग इसी प्रकार के परिणाम स्त्री प्रयोज्यों के लिए भी प्राप्त किए गए हैं। यहाँ भी उच्च विषाद् समूह ने निम्न विषाद् समूह की अपेक्षा उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त किया है फिर भी दोनों मध्यमानों के बीच का तुलनात्मक मूल्य (टी = 1.06) 05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वर्तमान संदर्भ में निर्मित परिकल्पना का समर्थन वर्तमान अध्ययन परिणामों द्वारा नहीं होता है। अतः वर्तमान अध्ययन में प्राप्त परिणामों को मात्र संजोगवश माना जा सकता है।

विषाद् प्राप्तांकों पर यौन भिन्नता तथा उपलब्धि प्रेरणा पर मुख्य प्रभाव तथा इन दोनों परिवर्तनों के अन्तःक्रियात्मक प्रभाव को जानने के लिए यौन तथा उपलब्धि प्रेरणा का प्रसारण विश्लेषण ज्ञात किया गया तथा प्राप्त परिणामों को सारणी–3 में संकलित किया गया है।

सारणी–3

यौन भिन्नता तथा उपलब्धि–प्रेरणा का प्रसरण विश्लेषण

स्त्रोत	डी0एफ0	एस0एस0	एम0एस0	एफ0 मूल्य	पी–मूल्य
यौन (ए)	1	54.49	54.49	1.79	NS
समूह (बी)	1	135.15	135.15	4.43	.05
अंतःक्रिया (ए×बी)	1	19.72	19.72	.64	NS
अशुद्धि	296	9018.23	30.46		
योग	299	9227.59			

* .01 स्तर पर सार्थक

सारणी–3 में संकलित किए गए परिणामों की व्याख्या से स्पष्ट होता है कि विषाद् की मात्रा पर यौन भिन्नता का सार्थक प्रभाव नहीं होता है। (एफ0 = 1.79, डी0एफ0 = 1/296, पी0 = .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।) फिर भी विषाद् की मात्रा पर उपलब्धि प्रेरणा के उच्च और निम्न मात्राओं का विषाद् के ऊपर प्रभाव सार्थक प्राप्त हुए हैं। इस संदर्भ में प्राप्त एफ0–मूल्य (एफ0 = 4. 43) .05 स्तर पर सार्थक है। इसी क्रम में जब विषाद् की मात्रा पर यौन भिन्नता तथा उपलब्धि प्रेरणा के अन्तःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया तो पाया गया कि उक्त दोनों चर अन्तःक्रियात्मक रूप से विषाद् की मात्रा को प्रभावित नहीं करते। (एफ0 = .85, डी0एफ0 = 1/296, पी0 = .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।)

उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर स्पष्ट होता है कि वर्तमान अध्ययन परिणामों द्वारा इस संदर्भ में निर्मित परिकल्पना का यद्यपि कि आंशिक समर्थन होता है, फिर

भी वर्तमान अध्ययन परिणाम बहुत हद तक सामान्य निरीक्षण, व्यक्तिगत अनुभव तथा इस क्षेत्र में किए गए अनुभाविक अध्ययनों में सर्वथा विपरीत है, क्योंकि उच्च तथा निम्न उपलब्धि प्रेरणा का सम्बन्ध व्यक्ति की मानसिक स्थिति के साथ निश्चित रूप से संभव है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले व्यक्ति सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अधिक चिंतित एवं सक्रिय होते हैं। इसके विपरीत निम्न उपलब्धि प्रेरणा वाले व्यक्ति उच्च उपलब्धि प्राप्त करने के लिए कम सक्रिय होते हैं। व्यक्ति में चिंता एवं सक्रियता की अत्यधिक मात्रा असफलता की स्थिति में उसके अन्दर कई प्रकार की मानसिक विकृतियाँ जैसे– चिंता विकृति, तनाव तथा प्रतिबल (Stress) आदि को जन्म देते हैं जो अन्त में व्यक्ति में विषादी लक्षणों को उत्पन्न करते हैं। इस बात की पुष्टि भारतवर्ष तथा पाश्चात्य देशों में किए गए। कुछ अनुभाविक अध्ययनों से भी होता है। सिंह तथा अन्य (1988), रोजरल तथा अन्य (2006) तथा गेट्स तथा उनके सहयोगियों (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक क्षेत्र में उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले छात्रों में अपनी परीक्षा को लेकर चिंता एवं परीक्षा प्रतिबल की मात्रा अधिक थी। इस बात का समर्थन मियाँ तथा कुमारी (2011) के अध्ययनों से भी होता है। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा पर उच्च तथा निम्न समूहों के बीच उनकी शैक्षिक उपलब्धि को लेकर सार्थक भिन्नता थी। साथ ही साथ शैक्षिक उपलब्धि वाले प्रयोज्यों ने चिंता मापनी पर भी उच्च प्राप्तांक प्राप्त किया था।

निष्कर्ष

परिणामों के उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

1. छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में विषाद् की मात्रा अधिक होती है।
2. विषाद् के ऊपर उपलब्धि प्रेरणा का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान अध्ययन का पुर्नमूल्यांकन आवश्यक है क्योंकि टी–सारणी तथा प्रसरण विश्लेषण सारणी में प्रस्तुत परिणाम एक–दूसरे के विपरीत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Miya, I. & Kumari, Reena (2011) : Role of Cognitive Style and Academic Self Concept in Learning and Achievement Behaviour Metric, 28, 1-2, 36-40.*
2. *Singh, A.R. et.al. (1988) : Outcome of Community based Socio-vocational Rehabilitation Programme for Drug and Alcohol Dependents. Eastern Zonal Branch Journal, 2, 1, 29-32.*
3. *Rossler, W. et.al. (2006) : Does the Place of Treatment Influence the Quality of Schizophrenia, Acta Psychiatry Schandivana, 100, 142-148.*
4. *Gest, S.D. et.al. (2005) : Peer Academic Reputation in Elementary School Associations with changes in Self concept and Academic Skills. Journal of Educational Psychology. 97, 3, 346-387.*
5. *Atkinson, J.W. & Feather, N.T. (1966). A Theory of Achievement Motivation. New York : Johan Wiley.*
6. *Nietzel, M.T. & Horris, M.J. (1990). Relationships of Dependency and Achievement/Autonomy to Depression. Clin. Psy. Rev., 10, 279-97.*
7. *Marshall, S. Hills K. (1972). The taking of adult roles in middle childhood. Journal of Abnormal and Social Psychology; 73, 493-503.*
8. *Cramer, P. (1979). Defence Mechanism in Adolescence. Development Psychology, 15, 476-477.*
9. *Gore, W.R. & Herb. T.R. (1974). Stress and Mental Illness among the Young : A Comparison of the Sexes. Social Forces, 53, 256-265.*